टिप्पणी

21

एक अंकन प्रणाली-इकहरा लेखन प्रणाली

हम लेखांकन की दोहरा लेखा प्रणाली के बारे में काफी कुछ पढ़ चुके हैं। इस प्रणाली के अनुसार एक लेनदेन के दोनों पक्षों का अभिलेखन किया जाता है। लेनदेनों के अभिलेखन की एक अन्य प्रणाली, जिसे इकहरा लेखा प्रणाली कहते हैं, भी अस्तित्व में है, जिसके अन्तर्गत एक लेनदेन के दोनों पक्षों को अभिलेखित नहीं किया जाता। इकहरा लेखा प्रणाली में दोहरा लेखा प्रणाली की भाँति स्पष्ट नियम नहीं होते, यहाँ तक कि रखी जाने वाली बहियाँ भी तय नहीं होती। इस प्रणाली में सामान्यतः रोकड़ बही तथा व्यक्तिगत खाते बनाए जाते हैं, वास्तविक तथा नाम–मात्र के खाते नहीं। इस प्रणाली में लेनदेनों के दोनों पक्षों का अभिलेखन नहीं किया जाता, इसलिए इस प्रणाली को 'अपूर्ण अभिलेखों से खाते' के नाम से जाना जाता है। कुछ विशिष्ट घटनाओं जैसे आग लगना, बाढ़, भूकंप आदि के कारण कई बार वे खाते भी अपूर्ण हो जाते हैं, जो दोहरा प्रणाली से रखे गए थे।

जो लेखांकन अभिलेख 'दोहरा लेखा प्रणाली' के अनुसार नहीं रखे जाते, उन्हें 'अपूर्ण अभिलखों से खाते' अथवा लेखांकन की इकहरा लेखा प्रणाली के नाम से जाना जाता है।

उद्देश्य

इस पाठ के अध्ययन के पश्चात आप :

- एक अंकन प्रणाली का अर्थ बता सकेंगे;
- एक अंकन प्रणाली/अपूर्ण अभिलेखों से खाते की उपयोगिता एवं सीमाओं का वर्णन कर सकेंगे;
- स्थिति विवरण प्रणाली से लाभ/हानि का निर्धारण कर सकेंगे;
- कुल देनदार, कुल लेनदार, प्राप्य बिल खाता एवं रोकड़ बही की गायब राशियों का निर्धारण कर सकेंगे;

टिप्पणी

- आरम्भिक स्थिति विवरण बनाकर प्रारम्भिक पूँजी का निर्धारण कर सकेंगे; एवं
- अन्तिम खाते बना सकेंगे।

21.1 परिभाषा

कोहलर ने इकहरा लेखा प्रणाली को इस प्रकार परिभाषित किया है, ''पुस्त पालन की एक ऐसी प्रणाली जिसमें केवल रोकड़ तथा व्यक्तिगत खातों के अभिलेख रखे जाते हैं, यह सदैव अपूर्ण दोहरा लेखा है जो परिस्थितियों के साथ–साथ परिवर्तित होता है।'' कई बार इकहरा लेखा प्रणाली को गलती से यह समझा जाता है कि इस प्रणाली के अन्तर्गत बहियों में लेनदेन केवल एक पक्ष को ही अभिलेखित किया जाता है। यह सत्य नहीं है। वास्तविकता यह है कि इस प्रणाली में कुछ विशिष्ट लेनदेनों के दोनों पक्षों को अभिलेखित किया जाता है, कुछ अन्यों के केवल एक पक्ष का अभिलेखन किया जाता है तथा कुछ लेनदेनों की अवहेलना कर दी जाती है।

विशेषताएँ

इकहरा लेखा प्रणाली की विशेषताएँ निम्नलिखित हैं–

i. **उपयुक्तता :** यह प्रणाली लघु व्यवसायों, जैसे एकल स्वामित्व अथवा साझेदारी फर्म, के लिए उपयुक्त है। कानूनी प्रावधानों के कारण सीमित कंपनियाँ अपनी लेखा पुस्तकों को इस प्रणाली से नहीं रख सकती।

ii. **रोकड़ बही बनाना :** इस प्रणाली में सामान्यतः एक रोकड़ बही बनाई जाती है, जिसमें व्यवसाय के साथ–साथ निजी लेनदेनों का मिश्रण रहता है।

iii. **व्यक्तिगत खाते बनाना :** इस प्रणाली में सामान्यतः केवल व्यक्तिगत खाते बनाए जाते हैं तथा वास्तविक व नाम मात्र के खातों की अवहेलना की जाती है।

iv. **एकरूपता नहीं :** यह प्रणाली फर्म–दर–फर्म भिन्न हो सकती है, क्योंकि सभी उपक्रमों द्वारा एक जैसे सिद्धान्तों का पालन नहीं किया जाता।

v. **मूल प्रमाणकों की आवश्यकता :** आवश्यक सूचनाएँ एकत्र करने हेतु इस प्रणाली में हमें सामान्यतः मूल प्रमाणकों पर निर्भर रहना पड़ता है।

vi. **अन्तिम खाते बनाना :** नाम मात्र तथा वास्तविक खातों की अनुपस्थिति में अंतिम खाते सरलता से नहीं बनाए जा सकते। यह तभी संभव है, जब उपलब्ध सूचनाओं को दोहरा लेखा प्रणाली में परिवर्तित कर दिया जाए। तभी व्यापार एवं लाभ–हानि बनाया जा सकता है।

अपूर्ण अभिलेखों से सभी संपत्तियों एवं सभी देयताओं की धनराशि भी परिकलित की जाती है परंतु ये अनुमानों पर आधारित होती हैं। यही कारण है कि इस प्रणाली में लेखांकन अवधि के अंत में संपत्तियों तथा देयताओं का एक विवरण बनाया जाता है, जिसे स्थिति–विवरण की बजाय तुलन–पत्र कहा जाता है।

टिप्पणी

21.2 इकहरा लेखा प्रणाली के उपयोग

इकहरा लेखा प्रणाली के उपयोग निम्नलिखित हैं–

i. **सरल विधि :** इकहरा लेखा प्रणाली व्यवसाय लेनदेनों के अभिलेखन की काफी सरल विधि है।

ii. **कम खर्चीली :** पुस्तपालन की दोहरा लेखा प्रणाली की तुलना में यह कम खर्चीली है।

iii. **लघु इकाइयों हेतु उपयुकत :** यह मुख्य रूप से उन लघु व्यवसाय इकाइयों हेतु उपयुक्त है, जिनमें सीमित संख्या में लेनदेन होते हैं तथा बहुत कम संपत्तियाँ तथा देयताएँ होती है।

iv. **पुस्त पालन के सिद्धान्तों के ज्ञान की आवश्यकता नहीं :** इकहरा लेखा प्रणाली में लेखा पुस्तकें सरलता से बनाई जा सकती हैं, क्योंकि इन्हें बनाने हेतु पुस्त पालन के सिद्धान्तों के ज्ञान की आवश्यकता नहीं होती।

v. **लाभ अथवा हानि ज्ञात करना सरल :** लाभ अथवा हानि का पता लगाना काफी सरल होता है। लाभ अथवा हानि का पता लगाने हेतु स्वामी को लेखांकन अवधि के अंत में व्यवसाय की वित्तीय स्थिति की तुलना प्रारंभ की वित्तीय स्थिति से करनी होती है।

इकहरा लेखा प्रणाली की सीमाएँ

इकहरा लेखा प्रणाली अपूर्ण तथा अपर्याप्त सूचनाएँ उपलब्ध कराती है। अतः इसकी निम्नलिखित सीमाएं हैं :

i. **अंकगणितीय शुद्धता सिद्ध नहीं की जा सकती :** तलपट नहीं बनाया जा सकता तथा इसलिए लेखा पुस्तकों की अंकगणितीय शुद्धता को सिद्ध करना अथवा जाँचा नहीं जा सकता। त्रुटियों, गबन एवं कपट के होने की संभावनाएँ अधिक होती हैं।

ii. **संपत्तियों पर नियंत्रण नहीं :** संपत्तियों के दुरूपयोग को रोकने हेतु पूर्ण नियंत्रण करना काफी कठिन होता है, क्योंकि संपत्तियों के खाते नहीं रखे जाते।

iii. **सही लाभ का पता नहीं लगाया जा सकता :** व्यापार एवं लाभ–हानि खाता नहीं बनाया जा सकता और इसलिए लेखांकन अवधि के दौरान अर्जित किए गए यही लाभ अथवा वहन की गई हानि का पता नहीं चलता।

iv. **व्यवसाय की वित्तीय स्थिति का पता नहीं चलता :** तुलन–पत्र, जिसे इकहरा लेखा प्रणाली में अवस्था विवरण कहा जाता है, एक असंतोषजनक विधि से बनाई जाती है। संपत्तियाँ एवं देयताएँ अभिलेखों से उपलब्ध नहीं कराई जाती बल्कि भौतिक निरीक्षण द्वारा लिखी जाती हैं तथा अनुमान आधारित होती हैं। अतः किसी एक विशिष्ट तिथि को व्यवसाय की सच्ची वित्तीय स्थिति जानने के लिए तुलन–पत्र नहीं बनाया जा सकता। परिणाम स्वरूप, कुल शुद्ध संपत्तियों की सही स्थिति का पता नहीं लग पाता।

टिप्पणी

v. **आन्तरिक जाँच नहीं :** आन्तरिक जाँच संभव न होने के कारण इस विधि में त्रुटियों एवं गबनों के लिए पर्याप्त स्थान रहता है तथा इनका पता लगाना भी काफी कठिन होता है।

vi. **व्यवसाय के मूल्य का पता लगाना कठिन :** अभिलेखों के अपर्याप्त होने के कारण व्यवसाय विशेष रूप से ख्याति, का मूल्यांकन करना कठिन होता है।

vii. **नियोजन एवं नियंत्रण हेतु अपर्याप्त :** लेखांकन अभिलेखों द्वारा दी गई लेखांकन सूचना प्रबन्धकीय नियोजन एवं नियंत्रण हेतु अपर्याप्त होती है।

viii. **अपूर्ण एवं अवैज्ञानिक प्रणाली :** यह प्रणाली अपूर्ण एवं अवैज्ञानिक है, क्योंकि इसमें लेनदेनों के दोनों पहलुओं को अभिलेखित नहीं किया जाता तथा उनके अभिलेखन हेतु निर्धारित नियमों का पालन नहीं किया जाता।

ix. **तुलनात्मक अध्ययन कठिन है :** इस प्रणाली का एक मुख्य दोष है कि व्यवसाय के लेनदेनों की अपूर्ण सूचना के कारण चालू वर्ष की स्थिति की तुलना गत वर्ष से नहीं की जा सकती।

पाठगत प्रश्न 21.1

I. उपयुक्त शब्द/शब्दों से रिक्त स्थान भरिए :

i. एक स्थिति विवरण में व्यवसाय की केवल ..... परिसम्पत्तियाँ तथा देयताओं को भौतिक आधार पर रखा जाता है।

ii. इकहरा लेखा प्रणाली, व्यवसाय लेनदेनों के अभिलेखन की काफी ..... विधि है।

iii. पुस्तपालन की दोहरा प्रणाली की तुलना में इकहरा लेखा प्रणाली ..... खर्चीली है।

II. बताइए कि निम्नलिखित कथन सत्य है अथवा सत्य :

i. अपूर्ण अभिलेखों से तैयार किया गया अवस्था विवरण संतोषजनक सूचना उपलब्ध करता है।

ii. अपूर्ण अभिलेखे तैयार करना एक वैज्ञानिक प्रणाली है।

iii. इकहरा लेखा प्रणाली में तुलनात्मक अध्ययन करना कठिन होता है।

21.3 अपूर्ण अभिलेखों से लाभ ज्ञात करना

हम जानते हैं कि किसी भी व्यवसाय का मुख्य उद्देश्य लाभ कमाना होता है। इसीलिए प्रत्येक व्यवसाय का स्वामी एक निश्चित अवधि के बाद, सामान्यतः एक वर्ष के अंत

टिप्पणी

में, यह जानना चाहता है कि उसने कितना लाभ कमाया अथवा कितनी हानि उठाई। वास्तव में लाभ अथवा हानि का पता लगाना तब और भी अनिवार्य हो जाता है, जब व्यवसाय एक साझेदारी फर्म के रूप में चलाया जाता है, क्योंकि तब प्रत्येक लेखांकन अवधि के अंत में साझेदारों द्वारा लाभ बाँटा जाता है। अब प्रश्न यह उठता है कि जब लेखांकन अभिलेखे अपूर्ण हों तो लाभ कैसे ज्ञात किया जाए। कारण यह है कि तलपट की अनुपस्थिति में लाभ–हानि खाता नहीं बनाया जा सकता। ऐसी स्थिति में व्यवसाय के लाभ को ज्ञात करने हेतु दो विधियाँ प्रयोग की जाती हैं, जो निम्न हैं:

(1) शुद्ध मूल्य विधि अथवा अवस्था विवरण विधि

(2) परिवर्तन विधि

शुद्ध मूल्य विधि अथवा अवस्था विवरण विधि

अपूर्ण अभिलेखों से लाभ ज्ञात करने हेतु यह आवश्यक है कि वर्ष के प्रारंभ तथा अंत के अवस्था विवरण बना लिए जाएँ, यदि पहले से न बने हों।

तुलन–पत्र की भाँति अवस्था विवरण के दो पक्ष होते हैं– दायाँ पक्ष संपत्तियों हेतु तथा बायाँ पक्ष देयताओं हेतु। विवरण बनाने हेतु विभिन्न स्रोतों से सूचना एकत्र करनी होती है। संपत्तियों के बारे में सूचना, रोकड़ बही तथा व्यक्तिगत खातों आदि से उपलब्ध होगी। अंतिम रहतिए का मूल्य ज्ञात करने हेतु स्कंध पत्रिका बनाई जाएगी तथा हस्तस्थ स्कंध का मूल्यांकन, लागत मूल्य अथवा बाजार मूल्य जो भी कम हो, के आधार पर किया जाएगा। यदि व्यापारी के पास कोई अन्य संपत्तियाँ, जैसे फर्नीचर, मशीनरी आदि है, तो उनका मूल्य ज्ञात करके संपत्तियों में सम्मिलित किया जाएगा। बाहरी व्यक्तियों/फर्मों को देय धनराशियों की पूर्ण जानकारी व्यवसाय के पास होनी चाहिए। संपत्तियों एवं देयताओं के योगों का अंतर, पूँजी होगी।

पूँजी = कुल संपत्तियाँ – देयताएँ

लाभ जानने हेतु, यदि आवश्यक हो तो वर्ष के प्रारंभ का अवस्था विवरण बनाकर वर्ष के प्रारंभ की पूँजी भी ज्ञात करनी होती है। यदि वर्ष के अंत की पूँजी, प्रारंभ की पूँजी से अधिक होती है तो हम कह सकते हैं कि लाभ हुआ है। दूसरी स्थिति में यदि वर्ष के प्रारंभ की पूँजी, वर्ष के अंत की पूँजी से अधिक थी तो अवश्य हानि हुई है। यद्यपि लाभ ज्ञात करने हेतु दो समायोजनों को ध्यान में अवश्य रखना चाहिए।

i. **लगाई गई अतिरिक्त पूँजी हेतु समायोजन :** यदि स्वामी ने वर्ष के दौरान कुछ अतिरिक्त पूँजी लगाई है तो उसे वर्ष के अंत की पूँजी में से घटा देना चाहिए (क्योंकि यह वृद्धि लाभ के कारण नहीं बल्कि अतिरिक्त पूँजी लगाने के कारण है)।

ii. **आहरण हेतु समायोजन :** स्वामी के आहरण को वर्ष के अंत की पूँजी में जोड़ देना चाहिए, क्योंकि यदि आहरण न किया जाता तो वर्ष के अंत में पूँजी अधिक होती।

सूत्र : लाभ ज्ञात करने हेतु सूत्र निम्न है :

लाभ = वर्ष के अंत की पूँजी + आहरण – वर्ष के प्रारंभ की पूँजी – लगाई गई अतिरिक्त पूँजी

उपरोक्त सूत्र को लाभ अथवा हानि के विवरण के रूप में निम्न प्रकार दर्शाया जा सकता है :

लाभ अथवा हानि का विवरण
वर्ष समाप्ति ..... हेतु

विवरण	₹
वर्ष के अंत में पूँजी	.....
जमा : वर्ष के दौरान आहरण	.....
घटा : वर्ष के प्रारंभ में पूँजी	.....
वर्ष के अंत में समायोजित पूँजी	.....
वर्ष के दौरान लगाई गई अतिरिक्त पूँजी	.....
वर्ष का लाभ/हानि	.....

अब उपरोक्त वर्णित कार्यविधि को निम्न रूप में सारांशित किया जा सकता है :

i. पहले, वर्ष के प्रारंभ की पूँजी परिकलित करने हेतु वर्ष के प्रारंभ का आवस्था विवरण बनाइए।

   एक अवस्था विवरण सभी संपत्तियों एवं देयताओं का विवरण है। दोनों पक्षों की धनराशियों के योग को पूँजी के रूप में लिया जाता है।

ii. उसके बाद, वर्ष के अंत की पूँजी परिकलित करने हेतु वर्ष के अंत का अवस्था विवरण बनाइए।

iii. वर्ष के अंत की समायोजित पूँजी में से वर्ष के प्रारंभ की पूँजी घटाइए। यह अंतर या तो लाभ होगा अथवा हानि।

iv. वर्ष के अंत की पूँजी को, आहरण जोड़कर तथा वर्ष के दौरान लगाई गई अतिरिक्त पूँजी घटाकर, समायोजित कीजिए।

निम्नलिखित उदाहरणों को देखिए तथा अध्ययन कीजिए कि अवस्था विवरण बनाकर किस प्रकार प्रारंभिक तथा अंतिम पूँजी ज्ञात की जाती है और उसके बाद अतिरिक्त पूँजी तथा आहरण के आवश्यक समायोजन करके किस प्रकार लाभ ज्ञात किया जाता है।

उदाहरण 1

राम अपनी पुस्तकों को इकहरा लेखा पद्धति के अनुसार बनाता है। वह आपको निम्नलिखित सूचनायें प्रदान करता है :

टिप्पणी

	₹
1 अप्रैल 2013 को पूँजी	60,800
1 अप्रैल 2014 को पूँजी	67,600
अप्रैल 2013 से मार्च 2014 तक आहरण	19,200
1 अगस्त 2013 को पूँजी लगायी	8,000

आप उपरोक्त सूचनाओं के आधार पर राम के लाभ व हानि की गणना कीजिए।

हल :

लाभ या हानि का विवरण

(31 मार्च 2014 को समाप्त होने वाले वर्ष के लिए)

विवरण	*धनराशि (₹)*
1 अप्रैल 2014 को पूँजी	67,600
जमा : आहरण (1 अप्रैल 2013 से मार्च 2014 तक)	19,200
	86,800
घटा : 1 अगस्त 2013 को लगायी गयी अतिरिक्त पूँजी	8,000
	78,800
घटा : 1 अप्रैल 2013 को पूँजी	60,800
वर्ष का लाभ	18,000

उदाहरण 2

रानी अपनी पुस्तकें इकहरा लेखा पद्धति के अनुसार बनाती है। 31 मार्च 2014 को समाप्ति होने वाले वर्ष के लिए वह आपको निम्नलिखित सूचनायें उपलब्ध कराती है।

	₹
31 मार्च 2014 को पूँजी	18,700
1 अप्रैल 2013 को पूँजी	19,200
वर्ष के दौरान अपने निजी व्यय के लिए निकाले	8,420

रानी ने वर्ष के दौरान ₹ 2,000 के विनियोग 2% आहरण प्रीमियम पर बेच दिए तथा उक्त धन को व्यवसाय में लगा दिया।

उपरोत सूचनाओं के आधार पर आपको रानी का लाभ या हानि का विवरण बनाना है।

टिप्पणी

हल :

लाभ अथवा हानि का विवरण
(31 मार्च 2014 को समाप्त होने वाले वर्ष के लिए)

विवरण	*धनराशि (₹)*
वर्ष के अन्त में पूँजी	18,700
जमा : वर्ष में किया आहरण	8,420
	27,120
घटा : वर्ष के दौरान लगायी अतिरिक्त पूँजी	2,040
वर्ष के अन्त में समायोजित पूँजी	25,080
घटा : प्रारम्भिक पूँजी	19,200
वर्ष का शुद्ध लाभ	5,880

उदाहरण 3

अरविन्द अपनी पुस्तकें इकहरा लेखा पद्धति के अनुसार रखते है। उनकी वित्तीय स्थिति 31.03.2013 और 31.03.2014 को निम्नलिखित हैं :

	31.3.2013 ₹	*31.03.2014* ₹
रोकड़	2,000	1,800
विविध देनदार	78,000	90,000
रहतिया	68,000	64,000
प्लांट एवं मशीनरी	1,20,000	1,60,000
विविध लेनदार	30,000	29,800
देय विपत्र	––	10,000

$\left(2{,}000 \times \frac{102}{100}\right)$

वर्ष 2013-14 के अन्तर्गत उन्होंने व्यवसाय में ₹ 20,000 अतिरिक्त पूँजी के रूप में निवेश किया। उन्होंने प्रति माह ₹ 6,000 अपने निजी व्यय के लिए निकाले। 31 मार्च 2014 को समाप्त होने वाले वर्ष के लिए लाभ की गणना कीजिए।

हल :

स्थिति विवरण
(31 मार्च 2013 को)

दायित्व	₹	*सम्पत्ति*	₹
विविध लेनदार	30,000	रोकड़	2,000

पूँजी	2,38,000	विविध देनदार	78,000
		रहतिया	68,000
		प्लांट एवं मशीनरी	1,20,000
	2,68,000		2,68,000

स्थिति विवरण

31 मार्च 2014 को

दायित्व	₹	*सम्पत्ति*	₹
विवधि लेनदार	29,800	रोकड़	1,800
देय विपत्र	10,000	विविध देनदार	90,000
पूँजी	2,76,000	रहतिया	64,000
		प्लांट एवं मशीनरी	1,60,000
	3,15,800		3,15.800

लाभ अथवा हानि का विवरण

(31 मार्च 2014 को समाप्त होने वाले वर्ष के लिए)

विवरण	₹
पूँजी 31 मार्च 2014 को	2,76,000
जमा : आहरण वर्ष 2013-14 में (6000 x 12)	72,000
	3,48,000
घटा : अतिरिक्त पूँजी लगायी समायोजित पूँजी (31.3.2014)	20,000
31 मार्च 2014 को समायोजित पूँजी	3,28,000
घटा : प्रारम्भिक पूँजी	2,38,000
2013-14 में लाभ	90,000

उदाहरण 4

एम.एस. धोनी, एक व्यापारी अपने खाते इकहरा पद्धति के अनुसार तैयार करता है। वह आपको निम्नलिखित सूचनाएं उपलब्ध कराता है :

	मार्च 31, 2013 ₹	*मार्च 31, 2014* ₹
बैंक में रोकड़	4,500	3,000
रोकड़ हाथ में	300	4,000
रहतिया	40,000	45,000

टिप्पणी

देनदार	12,000	20,000
कार्यालय उपकरण	5,000	5,000
विविध लेनदार	30,000	20,000
फर्नीचर	4,000	4,000

वर्ष के दौरान उन्होंने ₹ 6,000 अतिरिक्त पूँजी लगायी और ₹ 4,000 का आहरण किया। फर्नीचर पर 10% तथा कार्यालय उपकरण पर 5% ह्रास लगाइये।

लाभ तथा हानि का एक विवरण 31 मार्च 2014 को समाप्त होने वाले वर्ष के लिए बनाइये। 31 मार्च 2014 को स्थिति विवरण बनाइए।

हल :

लाभ अथवा हानि विवरण

(31 मार्च 2014 को समाप्त होने वाले वर्ष के लिए)

विवरण		*धनराशि (₹)*
31 मार्च 2014 को पूँजी (ह्रास के समायोजन से पूर्व)		30,000
जमा : आहरण		4,000
		65,000
घटा : वर्ष के दौरान पूँजी लगायी समायोजित पूँजी		6,000
		59,000
घटा : प्रारम्भिक पूँजी समायोजन से पूर्व लाभ		35,800
		23,200
घटा : कार्यालय फर्नीचर का ह्रास	400	
उपकरण का ह्रास	250	650
शुद्ध लाभ		22,550

स्थिति विवरण

(31 मार्च 2013 को)

देयताएं	*₹*	*सम्पत्ति*	*₹*
विभिन्न लेनदार	30,000	हस्तस्थ रोकड़	4,500
पूँजी	35,800	बैंक में रोकड़	300
		अन्तिम स्टॉक	40,000
		देनदार	12,000
		कार्यालयी उपकरण	5,000
		फर्नीचर	4,000
	65,800		65,800

टिप्पणी

स्थिति विवरण

31 मार्च 2014

देयताएँ	₹	*सम्पत्तियाँ*	₹
विभिन्न लेनदार	20,000	हस्तरोकड़	3,000
पूँजी	61,000	बैंक में रोकड़	4,000
		स्टॉक	45,000
		देनदार	20,000
		कार्यालय उपकरण	5,000
		फर्नीचर	4,000
	81,000		81,000

स्थिति विवरण (संशोधित)

31.3.2014 को

देयताएँ		₹	*सम्पत्ति*		₹
विभिन्न लेनदार		20,000	बैंक में रोकड़		3,000
पूँजी (आरम्भिक)	35,800		रोकड़ हाथ में		4,000
(+) पूँजी लगायी	6,000		रहतिया		45,000
लाभ	22,550		देनदार		20,000
(–) आहरण	4,000	60,350	कार्यालय उपकरण	5,000	
			(–) ह्रास	250	4,750
			फर्नीचर	4,000	
			(–) ह्रास	400	3,600
		80,350			80,350

पाठगत प्रश्न 21.2

बताइए कि निम्नलिखित सत्य हैं अथवा असत्य

i. पूँजी = कुल संपत्तियाँ + देयताएँ

ii. कुल संपत्तियाँ = पूँजी + देयताएँ

iii. लाभ = (अंत में पूँजी + आहरण – लगाई गई अतिरिक्त पूँजी – प्रारंभ में पूँजी)

टिप्पणी

21.4 रूपान्तरण विधि

अपूर्ण अभिलेखों से अंतिम खातों को तैयार करना

व्यवसाय के परिणाम अर्थात लाभों को जानने हेतु आप शुद्ध मूल्य विधि के बारे में पढ़ चुके हैं। परंतु इस विधि में अपूर्ण अभिलेखों से निश्चित महत्वपूर्ण सूचनाएँ (जैसे विक्रय, क्रय तथा प्रचालन व्यय) उपलब्ध नहीं होती। रूपांतरण विधि का अर्थ है लेखों को अपूर्ण अभिलखें से पूर्ण अभिलेखों में रूपांतरित करना।

रूपांतरण में शामिल चरण निम्नलिखित हैं :

i. अपूर्ण सूचनाओं/रकमों (जैसे रोकड़ अथवा बैंक का प्रारंभिक एवं अंतिम शेष, नकद क्रय/नकद विक्रय, आहरण आदि) को ज्ञात करने हेतु रोकड़ एवं बैंक सारांश बनाइए। (यदि पहले से उचित रूप में नहीं बना है।)

ii. अपूर्ण सूचनाओं (जैसे प्रारंभिक/अंतिम शेष, उधार विक्रय, देनदारों से प्राप्त रोकड़, प्राप्य विपत्र प्राप्त) को ज्ञात करने हेतु कुल देनदार खाता बनाइए।

iii. अपूर्ण सूचनाओं (जैसे, प्रारंभिक/अंतिम शेष, प्राप्य विपत्र प्राप्त, प्राप्य विपत्र संग्रहित, प्राप्य विपत्र बेचानित) को ज्ञात करने हेतु प्राप्त विपत्र खाता बनाइए।

iv. अपूर्ण सूचनाओं (जैसे प्रारंभिक/अंतिम लेनदार, उधार क्रय, देय विपत्र स्वीकृत, प्राप्य विपत्र बेचानित, लेनदारों को किए गए भुगतान) को ज्ञात करने हेतु कुल लेनदार खाता बनाइए।

v. अपूर्ण सूचनाओं (जैसे प्रारंभिक/अंतिम शेष, देय विपत्र स्वीकृत, देय विपत्र भुगतानित) को ज्ञात करने हेतु देय विपत्र खाता बनाइए।

vi. प्रारंभ में पूँजी का पता लगाने हेतु प्रारंभ का अवस्था विवरण बनाइए।

vii. अब प्रश्न, में दी गई विभिन्न सूचनाओं तथा उपरोक्त परिकलनों से व्यापार एवं लाभ–हानि खाता तथा तुलन–पत्र बनाइए। अंकगणितीय शुद्धता की जाँच करने हेतु, वित्तीय विवरणों को बनाने से पूर्व तलपट भी बना लेना चाहिए।

गायब राशियों को पता लगाने हेतु संकेत

गायब राशि	*संकेत*
1. शुद्ध उधार विक्रय	क) कुल देनदार खाता बनाइए ख) कुल विक्रय – नकद विक्रय – विक्रय वापसी
2. नकद विक्रय	क) रोकड़ एवं बैंक खाता सारांश ख) कुल विक्रय – शुद्ध उधार विक्रय
3. शुद्ध विक्रय	क) नकद विक्रय + उधार विक्रय – विक्रय वापसी ख) बेचे गए माल की लागत + सकल लाभ

टिप्पणी

4.	बेचे गए माल की लागत	क) प्रारंभिक स्कंध + शुद्ध विक्रय + प्रत्यक्ष व्यय – अंतिम स्कंध ख) शुद्ध विक्रय – सकल लाभ
5.	सकल लाभ	क) शुद्ध विक्रय – बेचे गए माल की लागत ख)
6.	नकद क्रय	क) रोकड़ एवं बैंक खाता सारांश बनाइए ख) कुल क्रय – कुल उधार क्रय
7.	शुद्ध उधार क्रय	क) कुल लेनदार खाता बनाइए ख) कुल क्रय – नकद क्रय – क्रय वापसी
8.	शुद्ध क्रय	क) नकद क्रय + उधार क्रय – क्रय वापसी ख) बेचे गए माल की लागत + अंतिम स्कंध – प्रारंभिक स्कंध
9.	लेनदारों को भुगतान	क) कुल लेनदार खाता ख) रोकड़ एवं बैंक खाता सारांश
10.	देनदारों से संग्रहण	क) कुल देनदार खाता ख) रोकड़ एवं बैंक खाता सारांश

पाठगत प्रश्न 21.3

बताइए कि निम्न समीकरण सत्य हैं अथवा असत्य

i. शुद्ध उधार विक्रय = कुल विक्रय + नकद विक्रय – विक्रय वापसी

ii. शुद्ध विक्रय = बेचे गए माल की लागत + सकल लाभ

iii. शुद्ध क्रय = बेचे गए माल की लागत + अंतिम स्कंध – प्रारंभिक स्कंध

iv. सकल लाभ = शुद्ध विक्रय – बेचे गए माल की लागत

21.5 गायब संख्या की गणना

अन्तिम खाते बनाने के लिए पर्याप्त सूचनाएं सीधे अपूर्ण खातों से नहीं मिल पाती हैं। दूसरे शब्दों में कुछ संख्या खातों से गायब होती है। इसी कारण उन संख्याओं को ज्ञात करने हेतु हमें कुछ खाते बनाने पड़ते हैं।

उनमें से कुछ महत्वपूर्ण यहाँ पर बताये जा रहे हैं :

टिप्पणी

i. **कुल क्रय को ज्ञात करना :** कुल क्रय उधार क्रय तथा नकद क्रय का योग होता है। यदि नकद क्रय प्रश्न में नहीं दी गयी है तो इसके लिए रोकड़ खाता बनाना होगा और रोकड़ खाते का शेष नकद क्रय होगा। उधार क्रय की गणना के निम्न खाते बनाये जाते हैं : (क) कुल लेनदार खाता; अथवा (ख) कुल देनदार खाता तथा देय वपत्र खाता।

(क) कुल लेनदार खाता : उधार क्रय को गणना करने के लिए कुल लेनदार खाता इस प्रकार बनाना चाहिए : सर्वप्रथम दी हुई सूचनायें लेनदार खाते में लिखनी चाहिए जैसे सबसे पहले आप प्रारम्भिक शेष लेनदार खाते के क्रेडिट पक्ष में लिखेंगे, रोकड़ का भुगतान डेबिट पक्ष में, यदि कोई छूट है तो डेबिट पक्ष में तथा अन्तिम शेष भी डेबिट पक्ष में। यदि विपत्र का निर्गमन किया गया है तो वह भी डेबिट पक्ष में दिखाया जाएगा। दोनों पक्षों का योग करने के उपरान्त डेबिट का योग अधिक होगा तथा क्रेडिट पक्ष में इस अन्तर को उधार क्रय के नाम से दिखायेंगे।

कुल लेनदार खाते का नमूना निम्नलिखित है :

कुल लेनदार खाता

विवरण	*राशि (₹)*	*विवरण*	*राशि (₹)*
रोकड़/बैंक	.....	शेष आगे लाये	.....
प्राप्त छूट	.....	देय विपत्र (अनादरित	
देय विपत्र	.....	देय विपत्र)	.....
क्रय वापसी	.....	कुल देनदार खाता	
शेष आगे ले गये	.....	(पृष्ठांकित प्राप्य विपत्र	
		अनादरित)	.....
		उधार क्रय (शेष राशि)	.....
	.....		.....

उदाहरण 5

निम्नलिखित सूचनाओं के आधार पर कुल क्रय की गणना कीजिए :

	₹
नकद	1,700
1 जनवरी 2013 को लेनदार	800
लेनदारों को नकद भुगतान	3,100
क्रय वापसी	100
31 दिसम्बर 2013 को लेनदार	1,340

टिप्पणी

हल :

कुल लेनदार खाता

विवरण	राशि (₹)	विवरण	राशि (₹)
रोकड़/बैंक	3,100	शेष आगे ले गये	800
क्रय वापसी	100	उधार क्रय	3,740
शेष आगे लाये	1,340		
	4,540		4,540

कुल क्रय = नकद क्रय + उधार क्रय

= 1,700 + 3,740 = 5,440

(ख) स्वीकृत देय विपत्र की गणना : कुल लेनदार खाते की भाँति एक देय विपत्र खाता बनाया जाता है। सर्वप्रथम सभी ज्ञात सूचनायें (जैसे देय विपत्र का आरम्भिक व अन्तिम शेष तथा वर्ष के अन्तर्गत भुगतान हुए देय विपत्र) लिखी जाती हैं और उसके बाद अज्ञात सूचनायें निकाली जाती हैं–

देय विपत्र खाता

विवरण	राशि (₹)	विवरण	राशि (₹)
रोकड़/बैंक	....	शेष आगे लाये	....
लेनदार	....	कुल देनदार खाता (स्वीकार किए देय विपत्र)	....
शेष आगे ले गये	....		
	....		....

उदाहरण 6

निम्न सूचनाओं के आधार पर कुल क्रय ज्ञात कीजिए :

	₹
देय विपत्र का आरम्भिक शेष	15,000
लेनदार का आरम्भिक शेष	18,000
देय विपत्र का अन्तिम शेष	21,000
लेनदार विपत्र का अन्तिम शेष	12,000
वर्ष के दौरान लेनदारों का भुगतान	90,600
वर्ष के दौरान देय विपत्र का भुगतान	26,700
क्रय वापसी	3,600
नकद क्रय	77,400

टिप्पणी

हल :

देय विपत्र खाता

विवरण	*राशि (₹)*	*विवरण*	*राशि (₹)*
रोकड़/बैंक खाता	26,700	शेष आगे ले गये	15,000
शेष आगे लाये	21,000	लेनदार (शेष राशि)	32,700
	47,700		47,700

कुल लेनदार खाता

विवरण	*राशि (₹)*	*विवरण*	*राशि (₹)*
रोकड़/बैंक खाता	90,600	शेष आगे लाये	18,000
क्रय वापसी	3,600	क्रय खाता	1,20,900
देय विपत्र	32,700		
शेष आगे ले गये	12,000		
	1,38,900		1,38,900

कुल क्रय = नकद क्रय + उधार क्रय
= 77,400 + 1,20,900
= 1,98,300

ii. कुल विक्रय की गणना : कुल विक्रय नकद विक्रय तथा उधार विक्रय का योग होता है। नकद विक्रय रोकड़ बही से प्राप्त हो जाती है। उधार विक्रय ज्ञात करने के लिए निम्न खाते बनाये जाते हैं : (क) कुल देनदार खाता अथवा (ख) कुल देनदार तथा प्राप्य विपत्र खाता।

(क) कुल देनदार खाता : उधार विक्रय देनदार खाता बनाकर ज्ञात कर ली जाती है। सर्वप्रथम ज्ञात सूचनायें लिखी जाती हैं जैसे आरम्भिक देनदार डेबिट की ओर, प्राप्त रोकड़ क्रेडिट की ओर देय छूट, अशोध्य ऋण तथा अन्तिम देनदार क्रेडिट की ओर लिख देते हैं। अन्त में दोनों साईड का योग कर लेते हैं अन्तर उधार विक्रय कहलाता है।

कुल देनदार खाता

विवरण	*राशि (₹)*	*विवरण*	*राशि (₹)*
शेष आगे लाये	.....	रोकड़/बैंक	.....
प्राप्य विपत्र (आनादरण)	.....	देय छूट	.....
उधार विक्रय	.....	विक्रय वापसी	.....

टिप्पणी

		अशोध्य ऋण	.....
		प्राप्य विपत्र	.....
		शेष आगे ले गये	.....
	.....		.....

उदाहरण 7

निम्नलिखित सूचनाओं के आधार पर वर्ष के दौरान हुई कुल विक्रय ज्ञात कीजिए:

	₹
1 जनवरी 2013 को देनदार	40,800
देनदारों से प्राप्त रोकड़	1,21,600
विक्रय वापसी	10,800
अशोध्य वापसी	4,800
31 दिसम्बर 2013 को देनदार	55,200
नकद विक्रय	1,13,600

हल :

कुल देनदार खाता

विवरण	*राशि (₹)*	*विवरण*	*राशि (₹)*
शेष आगे लाये	40,800	रोकड़/बैंक	1,21,600
उधार विक्रय (शेष राशि)	1,51,600	विक्रय वापसी	10,800
		अशोध्य ऋण	4,800
		शेष आगे ले गये	55,200
	1,92,400		1,92,400

कुल विक्रय = नकद विक्रय + उधार विक्रय
= 1,13,600 + 1,51,600
= 2,65,200

(ख) ग्राहकों से प्राप्त प्राप्य विपत्र की गणन : कुल देनदार खाते की भाँति ही प्राप्य विपत्र खाता बनाया जाता है। सभी ज्ञात सूचनाये (जैसे आरम्भिक व अनितम शेष, तथा वर्ष के दौरान भुगतान किये गए विपत्र, अनादरित विपत्र, नवीकृत विपत्र आदि) पहले खाते में लिखी जाती है उसके पश्चात् अन्तिम शेष निकाला जाता है।

प्राप्य विपत्र खाते का नमूना निम्नलिखित हैं :

टिप्पणी

प्राप्य विपत्र खाता

विवरण	राशि (₹)	विवरण	राशि (₹)
शेष आगे लाये	.....	रोकड़/बैंक	.....
कुल देनदार खाता	.....	बैंक (अनादरित विपत्र)	.....
		बैंक की छूट	.....
		कुल देनदार खाता (अनादरित विपत्र)	.....
		कुल लेनदार (विपत्र का बेचान)	.....
		शेष आगे ले गये	.....
	.....		.....

उदाहरण 8

निम्नलिखित से कुल विक्रय ज्ञात कीजिए :

	₹
आरम्भिक प्राप्य विपत्र	1,560
आरम्भिक देनदार	6,160
वर्ष के दौरान भुनाये गये विपत्र	4,180
देनदारों से प्राप्त रोकड़	14,000
अशोध्य ऋण अपलिखित किया	560
विक्रय वापसी	1,740
प्राप्य विपत्र (अनादरित)	360
अन्तिम प्राप्य विपत्र	1,200
अन्तिम देनदार	5,100
नकद विक्रय	8,180

हल :

कुल देनदार खाता

विवरण	राशि (₹)	विवरण	राशि (₹)
शेष आगे ले गये	6,160	रोकड़/बैंक	14,000
प्राप्य विपत्र (अनादरित)	360	अशोध्य ऋण	560
विक्रय (शेष धनराशि)	19,060	विक्रय वापसी	1,740
		प्राप्य विपत्र	4,180
		शेष आगे लाये	5,100
	25,580		25,580

टिप्पणी

कुल विक्रय	=	नकद विक्रय	+	उधार विक्रय
	=	8,180	+	19,060
	=	27,240		

प्राप्य विपत्र खाता

नाम जमा

विवरण	*राशि (₹)*	*विवरण*	*राशि (₹)*
शेष आगे लाये	1,560	नकद बैंक	4,180
देनदार	4,180	देनदार (अनादरित विपत्र)	360
		शेष आगे ले गये	1,200
	5,740		5,740

iii. विविध देनदारों या विविध लेनदारों के शेष ज्ञात करना : यदि उधार विक्रय और उधार क्रय दिए हुए हों, तो कुल देनदार खाता या कुल लेनदार खाता बनाकर देनदारों या लेनदारों के आरम्भिक या अन्तिम शेष ज्ञात किए जा सकते हैं।

उदाहरण 9

निम्नलिखित शेषों के आधार पर कुल देनदार खाता और कुल लेनदार खाता बनाइए तथा उधार विक्रय और उधार क्रय ज्ञात कीजिए–

	₹
देनदार 1 जनवरी को	5,000
लेनदार 1 जनवरी को	4,000
देनदार 31 दिसम्बर को	4,000
लेनदार 31 दिसम्बर को	6,000
वर्ष में प्राप्य विपत्र प्राप्त किए	10,000
वर्ष में देय विपत्र निर्गत किए	8,000
ग्राहकों से रोकड़ प्राप्त की	30,000
ग्राहकों को रोकड़ वापस की	500
लेनदारों को भुगतान	20,700
लेनदारों से छूट प्राप्त की	270
देनदारों को छूट दी	150

टिप्पणी

अशोध्य ऋण अपलिखित किए	1,200
अशोध्य ऋण प्राप्य	300
लेनदारों को प्राप्य विपत्र बेचान किए	4,000
ग्राहकों द्वारा दिए गए प्राप्य विपत्र अनादरित हुए	1,000
बेचान विपत्र अनादरित हुए	500
भुनाये विपत्र अनादरित हुए	700
विक्रय वापसी	600
क्रय वापसी	200

हल

कुल देनदार खाता

नाम खाता

विवरण	*राशि (₹)*	*विवरण*	*राशि (₹)*
शेष आगे लाये	5,000	रोकड़/बैंक	30,000
उधार विक्रय (शेष धनराशि)	38,250	छूट	150
रोकड़ वापसी	500	अशोध्य ऋण	1,200
प्राप्य विपत्र (अनादरित)	1,000	विक्रय वापसी	600
लेनदार	500	प्राप्य विपत्र	10,000
बैंक (भुनायें गए अनादरित विपत्र)	700	शेष आगे ले गये	4,000
	45,950		45,950

कुल लेनदार खाता

नाम जमा

विवरण	*राशि (₹)*	*विवरण*	*राशि (₹)*
रोकड़/बैंक	20,700	शेष आगे लाये	4,000
छूट	270	उधार क्रय (शेष राशि)	34,670
प्राप्य विपत्र (बेचान)	4,000	देनदार (बेचान विपत्र अनादरित)	500
क्रय वापसी	200		
देय वापसी	8,000		
शेष आगे ले गये	6,000		
	39,170		39,170

टिप्पणी

iv. प्राप्य विपत्र और देय विपत्र के शेष निकालना : यदि प्राप्य विपत्र और देय विपत्र के आरम्भिक व अन्तिम शेष नहीं दिए गये हों तो अज्ञात धनराशि प्राप्य विपत्र खाता या देय विपत्र खाता बनाकर ज्ञात की जा सकती हैं।

उदाहरण 10

निम्नलिखित विवरण से प्राप्य विपत्र खाते का अन्तिम शेष तथा देय विपत्र खाते का आरम्भिक शेष ज्ञात कीजिए –

	₹
प्राप्य विपत्र का आरम्भिक शेष	11,000
देय विपत्र का अन्तिम शेष	8,000
देय विपत्र निर्गमित	35,000
भुनाये गये प्राप्त विपत्र	46,000
प्राप्य विपत्र प्राप्त किए	49,000
देय विपत्र का भुगतान किया	36,000
अनादरित प्राप्य विपत्र	1,000

हल :

प्राप्य विपत्र खाता

नाम — जमा

विवरण	*राशि (₹)*	*विवरण*	*राशि (₹)*
शेष आगे लाये	11,000	रोकड़/बैंक	46,000
विविध देनदार	49,000	विविध देनदार	1,000
		शेष आगे ले गये	13,000
	60,000		60,000

देय विपत्र खाता

नाम — जमा

विवरण	*राशि (₹)*	*विवरण*	*राशि (₹)*
रोकड़/बैंक	36,000	शेष आगे ले लाये	9,000
शेष आगे ले गये	8,000	विविध लेनदार	35,000
	44,000		44,000

टिप्पणी

उदाहरण 11

अशोक उचित लेखा पुस्तकें नहीं रखता है। निम्नलिखित विवरणों से वर्ष समाप्ति 31 दिसम्बर 2014 हेतु व्यापार एवं लाभ–हानि खाता बनाइए तथा उसी तिथि को तुलन–पत्र बनाइए।

	31 दिसंबर, 2013 ₹	*31 दिसंबर, 2014* ₹
देनदार	9,000	12,500
स्कंध	4,900	6,600
फर्नीचर	500	750
लेनदार	3,000	2,250

अन्य लेनदेनों का विश्लेषण इस प्रकार है :

	₹
देनदारों से संग्रहित रोकड़	30,400
लेनदारों को भुगतानित रोकड़	22,000
वेतन	600
किराया	750
कार्यालय व्यय	1,500
आहरण	1,000
लगाई गई अतिरिक्त पूँजी	750
नकद विक्रय	2,500
नकद क्रय	350
छूट प्राप्त	150
छूट दी गई	500
वापसी अन्तर्वाह	400
डूबत ऋण	100

वर्ष के प्रारंभ में उसे पास ₹ 2,500 रोकड़ शेष था।

हल :

व्यापार एवं लाभ-हानि खाता
वर्ष समाप्ति 31 दिसंबर 2014 हेतु

नाम जमा

विवरण		*राशि (₹)*	*विवरण*		*राशि (₹)*
प्रारंभिक स्कंध		4,900	विक्रय :		
क्रय :			नकद	750	
नकद	2,500		उधार (नोट 3)	34,650	
उधार (नोट 4)	22,000			35,400	
घटा : वापसी	400	24,100	*घटा :* वापसी	500	34,900
सकल लाभ आ. ले.		12,500	अंतिम स्कंध		6,600
		41,500			41,500
वेतन		6,000	सकल लाभ		12,500
किराया		750	छूट प्राप्त		350
कार्यालय व्यय		900			
छूट दी गई		150			
डूबत ऋण		100			
शुद्ध लाभ, पूँजी खाते में हस्तांतरित		4,950			
		12,850			12,850

स्थिति विवरण
31 दिसंबर 2014 को

देयताएँ		*राशि (₹)*	संपत्तियाँ		*राशि (₹)*
लेनदार		2,250	रोकड़		1,000
फर्नीचर हेतु लेनदार (750–500)		250	देनदार		12,500
1.1.2014 को पूँजी (नोट 1)	13,900		स्कंध		6,600
			फर्नीचर		750
जमा : पूँजी लगाई	1,000				
शुद्ध लाभ	4,950				
	19,850				
घटा : आहरण	1,500	18,350			
		20,850			20,850

टिप्पणी

परिकलन नोट्स

स्थिति विवरण
31 दिसम्बर 2013 को

देयताएँ	*राशि (₹)*	*संपत्तियाँ*	*राशि (₹)*
लेनदार	3,000	रोकड़ एवं बैंक शेष	2,500
पूँजी (बकाया राशि)	13,900	देनदार	9,000
		स्कंध	4,900
		फर्नीचर	500
	16,900		16,900

रोकड़ बही

नाम — जमा

विवरण	*राशि (₹)*	*विवरण*	*राशि (₹)*
शेष आ.ला.	2,500	विविध लेनदार	22,000
विविध देनदार	30,400	वेतन	6,000
पूँजी	1,000	किराया	750
नकद विक्रय	750	कार्यालय व्यय	900
		आहरण	1,500
		क्रय	2,500
		शेष आ. ले.	1,000
	34,650		34,650

कुल देनदार खाता

नाम — जमा

विवरण	*राशि (₹)*	*विवरण*	*राशि (₹)*
शेष आ. ला.	9,000	रोकड़/बैंक	30,400
उधार विक्रय (संतोलन राशि)	34,650	छूट दी गई	150
		वापसी अन्तर्वाह	500
		डूबत ऋण	100
		शेष आ. ले.	12,500
	43,650		43,650

कुल लेनदार खाता

नाम जमा

विवरण	राशि (₹)	विवरण	राशि (₹)
रोकड़/बैंक	22,000	शेष आ. ला.	3,000
छूट प्राप्त	350	उधार क्रय (संतोलन राशि)	22,000
वापसी बहिर्वाह	400		
शेष आ. ले.	2,250		
	25,000		25,000

आपने क्या सीखा

- इकहरा लेखा प्रणाली एक ऐसी प्रणाली है, जिसमें लेखांकन अभिलेखों को पुस्त पालन की दोहरा लेखा प्रणाली के अनुसार नहीं रखा जाता।
- इस प्रणाली में सामान्यतः व्यक्तिगत खाते रखे जाते हैं तथा वास्तविक एवं नाम–मात्र के खातों को रखने से बचा जाता है।
- अवस्था विवरण सभी संपत्तियों एवं देयताओं का एक विवरण है। दोनों पक्षों की राशियों के बीच का अंतर पूँजी के रूप में लिया जाता है।
- अपूर्ण अभिलेखों से लाभ ज्ञात करने हेतु दो विधियों का प्रयोग किया जाता है, जो निम्न हैं : (i) शुद्ध मूल्य विधि या अवस्था विवरण विधि (ii) रूपांतरण विधि
- अवस्था विवरण विधि में प्रारंभिक तथा अंतिम पूँजी ज्ञात करने हेतु वर्ष के प्रारंभ तथा अंत के अवस्था विवरण बनाए जाते हैं। वर्ष के दौरान अर्जित किए गए लाभ को ज्ञात करने हेतु लगाई गई अतिरिक्त पूँजी तथा आहरण के संबंध में पूँजी को समायोजित किया जाता है।
- रूपांतरण विधि में अपूर्ण अभिलेखों को दोहरा लेखा प्रणाली में रूपांतरित किया जाता है तथा लाभ ज्ञात किया जाता है।

पाठान्त प्रश्न

1. इकहरा लेखा प्रणाली को परिभाषित कीजिए तथा इसकी विशेषताओं का वर्णन कीजिए।
2. ऐसी किन्हीं तीन परिस्थितियों की सूची बनाइए जिनमें प्रस्तुत किए गए अभिलेख अपूर्ण होते हैं।

टिप्पणी

3. अवस्था विवरण विधि में लाभ कैसे परिकलित किया जाता है?

4. इकहरा लेखा प्रणाली से आपका क्या अभिप्राय है? इकहरा लेखा प्रणाली के उपयोगों को समझाइए।

5. ऐसी लेखा पुस्तकें जो दोहरा लेखा प्रणाली में नहीं रखी गई हैं उन्हें इस प्रणाली में रूपांतरित करने हेतु क्या कदम उठाने होंगे?

6. अरविन्द अपने व्यवसाय के उचित अभिलेख नहीं रखता है। वह आपको निम्न सूचनाएँ प्रदान करता है :

	₹
प्रारंभिक पूँजी	2,00,000
अंतिम पूँजी	2,50,000
वर्ष के दौरान आहरण	60,000
वर्ष के दौरान लगाई गई अतिरिक्त पूँजी	75,000

वर्ष का लाभ अथवा हानि परिकलित कीजिए।

7. एक दुकानदार द्वारा आपको निम्न सूचनाएँ प्रदान की गई हैं :

	1 अप्रैल 2013	*31 मार्च 2014*
	₹	₹
रोकड़	6,000	7,000
विविध देनदार	68,000	64,000
स्कंध	59,000	87,000
फर्नीचर	15,000	13,500
विविध लेनदार	20,000	18,000
देय विपत्र	15,000	11,000

वर्ष के दौरान अपने घरेलू उद्देश्यों हेतु दुकानदार ने ₹ 2,500 प्रति माह आहरित किए। उसने 1 अक्टूबर 2013 को अपने एक मित्र से ₹ 20,000 9% की दर से उधार भी लिए। उसने अभी तक कोई ब्याज नहीं दिया। देनदारों पर 5% की दर से संदिग्ध ऋणों हेतु प्रावधान करना है।

अवधि के दौरान उसके द्वारा अर्जित लाभ अथवा हानि ज्ञात कीजिए।

टिप्पणी

पाठगत प्रश्नों के उत्तर

21.1 I. (i) अनुमानित (ii) सरल (iii) कम

II. (i) असत्य (ii) असत्य (iii) सत्य

21.2 (i) असत्य (ii) सत्य (iii) सत्य

21.3 (i) सत्य (ii) सत्य (iii) सत्य (iv) सत्य

पाठांत प्रश्नों के उत्तर

6. लाभ ₹ 35,000

7. लाभ ₹ 35,400